

3



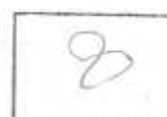
योग पूर्व पृष्ठ

+



पृष्ठ 3 के अंक

=



कुल अंक



प्रश्न 1 का उत्तर

निबन्धन्य वसना नव वय लविका
इसमें रूपका अलंकार है।

2

प्रश्न 2 का उत्तर

निबन्ध की परिभाषा -

रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार -

" यदि गद्य लेखकों की जरूरी है तो
निबन्ध गद्य की जरूरी है। "

2

प्रश्न 3 का उत्तर

निमाड़ी बोली निम्न दोहों में बोली जाती है
खंडवा, खरगोन, बडबानी आदि।

2

प्रश्न - 4 का उत्तर

रस के प्रमुख अंग

- 1) रूपायी भाव
- 2) विभाव
- 3) अनुभाव
- 4) संचारी भाव

2

8

का योग

4

8

+

5

=

13

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 4 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 5 का उत्तर
मातृक और वर्णिक छंद में अंतर
1) मातृक छंद में माताओं की गणना
होती है।

जबकि वर्णिक छंद में
वर्णों की गणना होती है।
2) मातृक छंद का उदाहरण है छप्पय छंद
जबकि वर्णिक छंद का
उदाहरण है सर्वथा छंद।

प्रश्न 6 का उत्तर
चम्पू काव्य -

वह काव्य जिसमें गद्य
व पद्य दोनों तरह के लक्षणों का समावेश
होता है चम्पू काव्य कहलाता है।

प्रश्न 7 का उत्तर
दो प्रसिद्ध पंक्तिकाओं के नाम

- युग निर्माण योजना
- अखण्ड ज्योति

5

पृष्ठ 4 के अंक का योग

5

13

योग पूर्व पृष्ठ

+

6

पृष्ठ 5 का अंक

=

19

कुल अंक



प्रश्न 8 का उत्तर

(अ) उसका हर काम गलत होता है।

(ब) जश्मीर का सौंदर्य मनमोहक है।

प्रश्न 9 का उत्तर

(अ) पानी-पानी होना - लज्जीत होना, शर्मसार होना

वाक्य - रामू को जब चोरी के मामले में गिरफ्तार किया गया तो वह अपने किये पर पानी-पानी हो गया।

(ब) रूख-पसीना एक करना - जीवन परीक्षा करना

वाक्य - इयाम ने अपना पकान रूख-पसीना एक करके बनाया है।

प्रश्न 10 का उत्तर

(अ) शायद राम घर पर है।

(ब) जो व्यक्ति आलसी होता है, वह उन्नति नहीं कर सकता।

क.पृ. 3.

(6)

17

+

5

=

24

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 6 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 11 का उत्तर

लोकगीत :-

लोक गीत ऐसे गीत होते हैं जो किसी क्षेत्र विशेष के लोगों द्वारा गाये जाते हैं तथा इनके बारे में सभी को जानकारी नहीं होती। ये गीत किसी विशेष त्यौहार, समारोह में गाये जाते हैं।

उदाहरण :-

झूल झईया झूल तेरी टोपी में फूल
चंपा तेरी कलियाँ चमेली तेरे फूल
जो लौ आगली मलैया को झूत
फट गई टोपी बिखर गये फूल

2

प्रश्न 12 का उत्तर

कावि ने 'उषा' शब्द का प्रयोग महाप्रलय के बाद हुये नव उदय के लिये किया है जो विजयानारी का प्रतिक है उषा अर्थात् सुनहरी किरणों से है। तथा कावि ने 'कालरात्रि' शब्द का प्रयोग धरती पर आने वाले महाप्रलय के लिये किया है जो कि विनाश का प्रतिक है।

2

3

इस तरह 'उषा' विजय लक्ष्मी हनारी का प्रतिक है तथा 'कालरात्रि' महाप्रलय का प्रतिक है, विनाश का प्रतिक है।

7

$$\boxed{24} + \boxed{3} = \boxed{27}$$

योग पूरी पाठ्य

पृष्ठ 7 में अंक

कुल अंक



प्रश्न 13 का उत्तर -
निबंधकार को अनुसार निबंध लेखन के
समय उत्पन्न होने वाली समस्याएँ निम्न
हैं -

1) सामग्री की दृष्टि से -

निबंधकार को
अनुसार पहली समस्या सामग्री है क्योंकि
निबंध लिखने से पहले उसके बारे में पूरी
जानकारी होना आवश्यक है।

2) शैली की दृष्टि से -

दूसरी समस्या है
शैली की। निबंध किस शैली में लिखा जाये।

3) शीर्षक की दृष्टि से -

निबंध लेखन में
निबंध का शीर्षक क्या रखें यह भी समस्या
है।

4) आकार की दृष्टि से -

निबंध का आकार
कौंसा हो। निबंध छोटा हो या बड़ा।

5) चिंतन मनन की दृष्टि से -

निबंध लिखने
से पूर्व उसके बारे में चिंतन मनन करना
भी आवश्यक है।

इस तरह लेखक को
सामने निम्न समस्या आई।

B
S
E
M
P

3

2



प्रश्न - 14 का उत्तर
द्विवेदी युग के निबंधों की विशेषताएँ -
i) इस युग के निबंध विवेचनात्मक शैली में लिखे गये।

ii) इस युग के निबंधों में व्याकरण समेत परिमार्जित भाषा का उपयोग किया गया।

iii) इस युग में आलोचनात्मक निबंधों का विकास हुआ।

iv) देश, प्रेम से ओत-प्रोत निबंध लिखे गये।

3

प्रश्न - 15 का उत्तर
गिरहणियों को गिराह में चीनी कोबी वाले को कोई अनुभव हुए जैसे उसने वहाँ देखा तो कैसे कैसे के लिए लुत्ते, बंदी को नकल करनी पड़ती है। भोजन के लिए कैसे जानबूझकर के साथ भी खाना खाना पड़ता है। आग के पास सोने पर उसे पता चला कि व्यक्ति को चाल से पता लगाया जा सकता है कि व्यक्ति किस स्थिति में है। इस तरह उसे कोई अनुभवों की अनुभूति हुई।

31

B
S
E
M
P

3

दृष्ट 8 के अंक का योग

9

30

+

6

=

36

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 9 के अंक

कुल अंक



अनुश्रुतों से उसने यह सिखा कि पैसा कमा-
ना एक ही तरीका है वस कुछ को प्रतिष्ठापूर्व
किया जा सकता है और कुछ को नहीं। और
उसने तय किया कि वह प्रतिष्ठापूर्वक ही धन
कमायेगा। इसलिए ही उसकी इच्छा थी
ईमानदार बनने की।

प्रश्न-16 का उत्तर

'भगवान के घर देर है अंधेर नहीं।'
भाव विस्तार :-

भगवान् सृष्टि के कण कण
में वसता है। मनुष्य को हमेशा अपने कार्य
करते रहना चाहिए। ईश्वर ने जो कुछ
दिया है सबको समान दिया है उसे कुछ
लोग अगर हड़पना ही चाहते हैं तो भी
ईश्वर देख रहा है भले ही कुछ समय
को लिए दुखी व्यक्ति को लगे की

उसके साथ अन्याय हो रहा है पर
धैर्य रखना होगा। क्योंकि जब उस शोषक
व्यक्ति को पाप का घड़ा भर जायेगा तो
ईश्वर उसे सख्त सजा देगा। भले ही थोड़ी
देर हो जाये पर हद पार नहीं होगी इसलिए
ही कहा गया है 'भगवान के घर देर है अंधेर नहीं।'

B
S
E
M
P

6

पृष्ठ 9 के अंक का योग

3

10

36

+

3

=

39

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 10 के अंक

कुल अंक



B
S
E
M
P

प्रश्न 17 का उत्तर

राम प्रसाद विरसिमल भारत में ही पुनर्जन्म लेना चाहते थे क्योंकि स्वतंत्रता से पूर्व उस समय भारत की स्थिति बड़ी सौजन्य थी। उन्हें लगता था कि इस देश को ऊपर उठाने में बहुत समय लगेगा। देश को स्वाधीन कराने, देश का विकास कराने, शिक्षा, चिकित्सा आदि के क्षेत्र में भारत को ऊपर उठाने की वासक उनके मन में थी इसलिये वे भारत में पुनर्जन्म लेना चाहते हैं उन्ही के शब्दों में—

“हे ईश ! भारत में सत बार मेरा जन्म हो
कारण सदा ही मृत्यु का
देशोपकारक काम हो।”

प्रश्न - 18 का उत्तर

सूर्य को डूबने से रोकने के लिए कावि ने कई उपक्रम और तंत्रारियाँ कर ली हैं जैसे सूरज को रोकने के लिए अपने आपको सशक्ता बना लिया है सूरज को डूबने से रोकने के लिए अपनी शक्तों को उपयोग में लाया है।

3

पृष्ठ के अंकों का योग

11

39

+

6

=

45



योग पूर्ण पृष्ठ

पृष्ठ 11 के अंक

कुल अंक

परिश्रमियों को काबू में करने के लिए
अपने मुठियों मजबूत कर ली है तथा
हलान अर्थात् निबलन जैसे विपरीत
परिश्रमियों में भी खुद को छे कर खड़ा
रखना कवि ने सीख लिया है

कवि को शब्दों में -

सूरज, जब बीज पहाड़ी से
लूटकरने लगेगा

मैं अपने कंधे अड़ा दूंगा

देखना वह वही ठहर जायेगा ।

3

प्रश्न - 19 का उत्तर

आत्म काथा और जीवनी में अंतर

आत्मकाथा

जीवनी

1. आत्म काथा मतलब स्वयं की जीवन काथा
2. आत्म काथा में लेखक अपनी स्वयं की गाथा लिखता है ।
3. आत्मकाथा में जीवन भर का वर्णन होता है ।
4. उदा. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र -

1. जीवनी मतलब किसी अन्य की जीवन गाथा ।
2. जीवनी में लेखक किसी अन्य व्यक्ति की जीवन गाथा लिखता है ।
3. जीवनी में जन्म से मृत्यु तक का वर्णन होता है ।
4. उदा. अमृत राय - कलम का

6

3

(12)

45

+

3

=

48

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 12 के अंक

कुल अंक



प्रश्न - 20 का उत्तर

'भोर का तारा' रचना को जला देना
शेखर को व्यक्तिगत प्रेम को
छोड़ राष्ट्र प्रेम का अहमित देने वाला
प्रतीक है।

'भोर का तारा'

शेखर की प्रवाचबंध व आंगार परक
रचना की जिसे उसने छाया व उसके
प्रेम प्रतीक स्वरूप में लिखा था परन्तु
जब उसे पता चला कि देश संकट में
है तो उसने अपने प्रेम प्रतीक स्वरूप
'भोर का तारा' रचना को अग्नि में
समर्पित कर दिया तथा देश की रक्षा
के लिए आज पूर्ण अविताल लिखने,
बोलने के लिए निकल पड़ा।

इस तरह 'भोर का तारा' का

अग्निवाह व्यक्तिवत्ता से उठकर समष्टि
के लिए समर्पण है। इस अध्यन को
सच ठहराती निम्न पंक्तियाँ
"यद्यपि सब जग का हित चिंतन सबको आवश्यक है
पर व्यक्ति मनुष्य पर पहला देश जाति का हक है।"

B
S
E
M
P

2

3

यदि कोई छात्र

13

48

+

3

=

51

योग पूर्व मूल

मूल 13 का अंक

कुल अंक



प्रश्न 2। का उत्तर
"मैं तुम लोगों से दूर हूँ" से कावि का
आश्रय यह है कि 'मैं' अर्थात् निम्नवर्गीय
व्यक्ति। 'तुम लोगों से' अर्थात् श्रृंगीपालि, शोषक
वर्ग से। 'दूर हूँ' अर्थात् निम्न वर्गीय
निर्धन व्यक्ति व श्रृंगीपालि शोषक धनी वर्ग
के जीवन स्तर में बहुत अंतर है।

इस में कावि ने यह
कहना चाहा है कि मैं निम्न वर्ग का निर्धन
व्यक्ति श्रृंगीपालि से बहुत दूर हूँ क्योंकि
हमारे जीवन स्तर का अंतर का स्वार्थ बहुत
गहरी है जिस सड़े गले भोजन का तुम
लोग विष समझ कर फेंक देते हो। वही
विष मेरे लिए भोजन है। अतः मैं तुम लोगों
से दूर हूँ। शोषक व शोषित में इस अंतर
के कारण ही ये पाँवों पर चलने की याद आती
है -

हे जगदीश ! करुणा निधान
क्या इसका ही कहना है जीवन।
जयनों में शोषित की धारा,
होता कि प्रानों में बित-बित कंदन।

B
S
E
M
P

3

3



प्रश्न 23 का उत्तर

तीन सयाने तीन अलग अलग बातें हैं
पहली धर्म, दूसरी कला, तीसरी विज्ञान
समाज के प्रति उनका
बड़ा ही महत्वपूर्ण योगदान है, कला के
कारण जीवन में अंग-तारंग आती है
जीवन आनंद भरी बनता है। कला के कारण
ही जीवन संगीत से जुड़ता है और व्यक्ति
सुख रहता है।

धर्म मनुष्य को मनुष्य
से जोड़ता है, भाई-भारता बिराता है सहायता
करना, मदद करना, एक को दुख से दूसरे
का दुखी होना, दूसरे को सुखी में सुख
होना, सत्य बोलना, ईमानदारी बजावारी
आदि अनेक प्रकार की शिक्षा धर्म में
प्राप्त होती है।

विज्ञान विज्ञान के योगदान
भी बहुत बड़ा है। जीवन को हर तरह से
सुखी बनाने, आरामदायक बनाने, हर बड़े-बड़े
जीवों का ज्ञान, धरती से आकाश और
पाताल की जानकारी विज्ञान से होती
है।

इस तरह इन तीनों का
योगदान स्पष्ट होता है।

15

54

+

4

=

58

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 15 के अंक

कुल अंक



प्रश्न - 26 का उत्तर
तुम्हारी बाणी - - - - - सकते हो।

शब्दार्थ :- ओज - वीर

आत्माओं - मन का

संदर्भ :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक
साहित्य भारती भाग-II के गद्यखंड
के 'ओज का तारा' नामक लघु-कथा
से ली गई है जिसके लेखक जगदीश
कुमार माथुर हैं।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश में माधव शेरवर को
अपने कर्तव्य पालन का बोध कराता है।

व्याख्या :- माधव, शेरवर से कहता है कि शेरवर
तुम्हारी बाणी में ओज है ऐसा स्वर
है कि जिससे देश में रहने वाले लोग
जिनकी आत्मा सीई हुई है वे जाग सकते
हैं। तुम्हारी आवाज लोगों के दिलों में वृत्त
आग लगा सकती है कि देश रक्षा के
लिए अपने प्राणों का बलिदान कर सकते
हैं। अतः तुम संगीत रचना का
व्यपन करो तथा देश प्रेम से ओत प्रोत
रचनाएँ करो।

विशेष - 1) भाषा परिभाषित है।

2) भाषा में प्रकाश है।

16

52

+

=

योग पूर्ण पृष्ठ

पृष्ठ 16 के अंक

कुल अंक



3) आज शर्मा रचनाएँ लिखने का आग्रह किया गया है।

4) किसी कवि ने ठीक ही कहा है

'प्रशनी पड़ी बीन पर राग नूतन अगर
किसी कवि ने गाये तो फिर कौन गाये'

प्रश्न 27 का उत्तर

तुम जो - - - - - चाहता है

शब्दार्थ :- स्वाधीनता - स्वतंत्रता
चेतना - जागृती

संदर्भ :- प्रस्तुत पद्यांश 'सर्वेश्वर' दयाल
सकसेना द्वारा रचित काव्य में
'सूरज को नहीं डूबने दूंगा' से
उद्धृत है।

प्रसंग :- प्रस्तुत पद्यांश में कवि सूरज को
रथ से स्वाधीनता की मूर्ति को
उतार लाना चाहते हैं।

अर्थ :- कवि कहते हैं कि सूरज के रथ
में जो स्वाधीनता की प्रतिमा है
जो सारथी की मूर्ति है जो इस
धरती को लगे का सुख है, जिसका
चार समय सीमा के बंधन में बंधा
नहीं है। जो हमारे शरीर में बहने

B
S
E
M
P



पृष्ठ 16 के अंक

17

58

+

8

=

66

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 17 के अंक

कुल अंक



वृत्त का प्रवाह है। जो मेरी जागृति है उसका विस्तार है तुम्हें मे रथ से उतार लाना चाहती हूँ। मुझे डर है कि तुम खरज के साथ ही डूब जाओगी इसलिए मैं तुम्हें रथ से उतार लाना चाहता हूँ।

विशेष :- 1) भाषा छंद मुक्त है।
2) भाषा में लयात्मकता का समावेश है।
3) अभिधा - शब्द शक्ति
4) स्वाधीनता की मूर्ति को उतार लाने का आग्रह है।

प्रश्न - 28 का उत्तर

(अ) शीर्षक - 'निंदा का व्यापार'

(ब) "निंदा कुछ लोगों की शृंखला होती है वे इसी को बल पर प्रतिष्ठा पाना चाहते हैं और निंदा करके वे अपने आपको सत समझने की गूँघट का अनुभव करते हैं।"

8

मे. अंको का योग

कृ. प्र. 3.

18

66

+

=

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 18 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 29 का उत्तर

प्रति,

श्रीमान महापौर महोदय
नगर निगम जरोरा (उ.प्र.)

विषय - मूहल्ले की सफाई कराने हेतु।

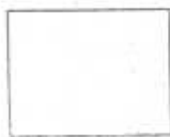
महोदय,

विषयान्तर्गत निवेदन है कि हमारे यहाँ मूहल्ला विष्णुपुरी कालोनी में कई दिनों से सफाई नहीं हो रही है जिसके कारण मूहल्ले की वास्तविकता को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कचरा जगह-जगह ढेर लग गया है। नालियाँ चक्का जाम हो गई हैं जिसके कारण कई जगह नालियों का पानी सड़क पर आ गया है। इस समस्याओं के कारण नगर वास्तविकता को कई समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। कई बीमारियाँ भी फैल रही हैं।

अतः महोदय से

मेरा निवेदन है कि इस समस्या पर कृपया उचित ध्यान देकर दृष्टिपात करने का कष्ट

B
S
E
M
P



पृष्ठ 18 के अंक का योग

19

66

+

6

=

72

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 19 का अंक

कुल अंक



कारों तथा जल्द से जल्द राहों की सफाई
कारानों की व्याप्ति करें।

कारों के लिए क्षमा।

दिनांक

13/03/07

भवदीय

अ. ब. स.

प्रश्न - 22 का उत्तर
काव्य की परिभाषा -

काव्य वह रचना होती है जिसमें लय, छंद, अलंकार के ध्यान में रखकर रचना की जाती है।

काव्य में भावों को काव्य लयबद्धता तथा काम के साथ पूर्ण रचना के रूप में प्रस्तुत करता है।

काव्य

मुक्तकाव्य

छंदकाव्य

महाकाव्य

खंडकाव्य

गोपमुक्त

पाठ्य मुक्तक

गीत

प्रगीत

6

स. न. ज. का. वि. वि.

20

72

+

4

=

76

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 20 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 24 का उत्तर
महादेवी वर्मा

(अ) भाषा शैली :-

महादेवी वर्मा की भाषा साधारण है उनकी शैली चित्रात्मक व वर्णात्मक है वे रचनाएँ ऐसी करती हैं जो सर्वसाधारण की आसानी से पढ़ सकता है तथा समझ सकता है। महादेवी जी को गद्य व पद्य पर समानाधिकार है। उनकी भाषा साधारण है।

(ब) रचनाएँ - रश्मि, नीरजा,
अतीत के चलोचन,
स्मृति की रेखाएँ

(स) साहित्य में स्थान -

महादेवी वर्मा ने गद्य व पद्य पर समानाधिकार किया है तथा स्त्रीयों को भी साहित्य रचना के लिए प्रोत्साहित किया है। उनकी रचना साहित्य की अनमोल धरोहर है।

21

76

+

4

=

80

योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 21 के अंक

कुल अंक



प्रश्न 25 का उत्तर
कबीरदास

(अ) भावपक्ष :-

कबीरदास का भाव अधिक प्रबल है उन्होंने साहित्य में भावपक्ष में ईश्वर को सर्व व्याप्त बताया है तथा उसकी आराधना के लिए आग्रह किया है उन्होंने आत्मा को परमात्मा का अंश माना है वह एक ईश्वर से अलग नहीं है।

(ब) कला पक्ष :-

कबीरदास की कला पक्ष उन्मादित उभरा नहीं है क्योंकि उनका उद्देश्य कविता बनाना नहीं था। उन्होंने सुधी कवि भाषा का उपयोग किया है। अतःकारण इस उनके काव्य पक्ष के अंग में है।

(स) रचनाएँ :-

कबीर की रचनाएँ

1) बीजक 2) कबीर ग्रंथावली

22

80

+

=



योग पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 22 के अंक

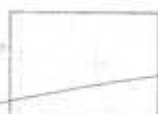
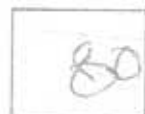
कुल अंक

प्रश्न 30 का 3 तर
"भारत में कृषि का महत्व"

रूप रेखा

- 1) प्रस्तावना
- 2) भारतीय कृषि
- 3) भारतीय कृषि का समस्याएँ
- 4) भारतीय कृषि का महत्व
- 5) भारतीय कृषि में सुधार के उपाय
- 6) उपसंहार

प्रस्तावना :- कहा गया है कि —
"किसी चीज का महत्व जानने के लिए पहले उसके न होने पर होने वाली स्थिति का कल्पना करना चाहिए।" यह सही भी है क्योंकि तभी उसका महत्व पता चलता



है। भारत कृषि प्रधान देश है किन्तु उसका महत्व भारत से ज्यादा अच्छे से जाना जा सकता है। भारत के लिए कृषि ही उसका जीवन है। यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

भारतीय कृषि :-

“भारत कृषि प्रधान देश है”
अतः भारत कई हजार वर्षों से अपने मुख्य व्यवसाय के रूप में कृषि को ही चुनता आ रहा है। भारत में कृषि अलग-अलग जगह पर अलग-अलग तरीकों से की जाती है स्थान के आधार भी कृषि का बदलाव है। पूर्व में चाय, जूट की खेती अधिक होती है तो पश्चिम में गेहूँ बाजरा/उत्तर में सब्जियों की खेती होती है तो दक्षिण में माछिस, काहवा आदि की।

इस तरह स्थानों के साथ कृषि भी बदल जाती है। जहाँ वर्षा अधिक होती है तथा सिंचाई के साधन हैं वहाँ वर्ष भर कृषि होती है जबकि जहाँ वर्षा कम है तथा सिंचाई के साधन का अभाव होता है वहाँ एक मौसम की ही खेती है। इस तरह भारतीय कृषि अपने आपमें

24

80

+

=

शेरा पूर्व पृष्ठ

पृष्ठ 24 के अंक

कुल अंक



मिराली है। भारतीय कृषि भी समय के साथ बदलनी चाहिए परन्तु आज आजादी का 50 से अधिक वर्ष हो चुके हैं पर भारतीय कृषि आज भी अविभाजित है।

भारतीय कृषि की समस्याएँ :-

भारतीय कृषि की कई समस्याएँ हैं जिनके कारण उसका पूर्ण विकास नहीं हो पाया है इसकी समस्याएँ निम्न हैं -

1) परम्परागत साधन -

भारतीय कृषक आज भी परम्परागत साधनों का ही उपयोग करता आ रहा है वही हल, बैल, गाँड़ी इस तरह कृषि का विकास नहीं हो पाया है।

2) सिंचाई का अभाव

3) सरकारी संरक्षण का अभाव

4) प्रति हेक्टेयर उत्पादन कम

5) भूमि की उर्वरा शक्ति का काम देना।

2007

80

पूरक उ.पु. 4 पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

1. केन्द्र की सीट **केन्द्र क्र. 68013**
2. परीक्षक के हस्ताक्षर व दिनांक **13.2.07**
3. केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर की सीट **13.2.07**
4. केन्द्र क्रमांक **68013**
5. परीक्षा का नाम **हायर सेकेंड्री स्तर परीक्षा**
6. विषय **हिन्दी (विशेष) 8 माध्यम हिन्दी**
7. दिनांक **13/03/07**

पृष्ठ



परीक्षक के लिये
स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें



भारतीय कृषि का महत्व -

भारतीय कृषि का

महत्व निम्न बिंदुओं से पता चलता है -

- i) श्रोज्य पदार्थ के रूप में
- ii) विदेशी मुद्रा अर्जित करने में
- iii) व्यापार में
- iv) उद्योगों में

भारतीय कृषि में सुधार के उपाय

- 1) नई वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग
- 2) सिंचाई की सुविधा से बढ़ोतरी
- 3) उर्वरकों का प्रयोग
- 4) उन्नत बीजों का प्रयोग
- 5) बायो यंत्रों का उपयोग

कृ. 8.3.

B
S
E
M
P

पृष्ठ

80

योग पूर्व पृष्ठ

+

7

पृष्ठ 2 के अंक

=

87

कुल अंक

उपसंहार :-

कृषि का विकास अत्यंत आवश्यक है। इसके विकास देश का विकास बली हो सकता है।

7

— — —

B
S
E
M
P



पृष्ठ के अंकों का योग